वैश्विक महामारी और साहित्यिक प्रस्तुति

(डॉ.सरिता)

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में आज के समय यदि कुछ ज्यलन्श अनुभूति और उसकी अभिव्यक्ति है तो वह कोरोगा महामारी है। विज्ञान और तकनीकी युग में इसका फै लगा कि और इसकी रोकथाम के लिए संसार में कोई दवा उपलब्ध न होषा समाज की चिंता को ओर बढ़ा रहा है । ऐसी स्थिति में आदमी के सामने ही एकान्तवास, सामाजिक दूरी और साफ-सफाई ही इसकी रोकथाम मैं है कारगर हैं, परन्तु यह इसका स्थाई ईलाज नहीं है। ऐसा भी नहीं है यह महामारी दुनिया में पहली है जिसका कोई ईलाज नहीं है। परन्कु, इसकी चर्चा दूसरी महामारियों से अलग अवश्य है। आज हमारे पान संचार के तकनीकी संसाधन हैं, जागरूकता के माध्यम हैं, शिक्षिह समाज है और स्वास्थ्य सेवाओं के विकल्प हैं। पहले ऐसा नहीं था। इसके अतिरिक्त आदमी का अदम्य साहस है, जो उसके अन्य जिजीविषा को बनाये रखता है। आज भी कोराना जैसी महामारी मैं जीने की निरन्तर हमें दिरमी जीने की इच्छा निरन्तर बनाए हुए है जो हमें आगे बढ़ने साहस देती है। दुनिया में समय-समय पर अनेक महामारी आती रही हैं, परन्तु कुछ महामरी ऐसी हैं जो समाज के अन्तर्मन को क्रेद कर रह देती हैं और समाज पर प्रश्न भी खड़ा करती हैं। आखिर समाज इनके प्रति इतना सजग और गम्भीर क्यों नहीं बन पाया। महामारी बन भौतिकता से भी कोई सम्बन्ध नहीं है, परन्तु साहित्यकार औरदार्शनिक इसकी अभिव्यक्ति अलग तरीके से करता है जो समाज प्रभावित करती है। वैश्विक साहित्य के आलोक में यदि देखा जाये तो महामारी कौ अभिव्यक्ति के कई रूप दिखाई देते हैं। इसके अलावा ये अन्य विधाओं- संगीत, ललित कला और चित्रकला के माध्यम से भी सामके आये हैं। भारतीय साहित्य में महामारी की प्रस्तुति उस स्तर पर नहीं हैं पायी है, जिस स्तर पर अन्य भाषाओं के साहित्य में । यहाँ पर अभाव विषमता और गरीबी को कथा साहित्य में महामारी की तरह ही प्रस्तुष किया गया है। इसी के माध्यम से हो आदमी के अन्दर जिजीविषा व निर्माण किया गया है। महामारी का चिन्तन व्यापक स्तर पर होता | तेजी से बढ़ता उपभोक्ता वर्ग और उसकी जरूरतें भी चिंतन का आधा वे श्विक परिप्रेक्ष्य में आज के समय यदि कुछ ज्यलन्श अनुभूति और उसकी अभिव्यक्ति है तो वह कोरोगा महामारी है। विज्ञान और तकनीकी युग में इसका फै लगा कि और इसकी रोकथाम के लिए संसार में कोई दवा उपलब्ध न होषा समाज की चिंता को ओर बढ़ा रहा है । ऐसी स्थिति में आदमी के सामने ही एकान्तवास, सामाजिक दूरी और साफ-सफाई ही इसकी रोकथाम मैं है कारगर हैं, परन्तु यह इसका स्थाई ईलाज नहीं है। ऐसा भी नहीं है यह महामारी दुनिया में पहली है जिसका कोई ईलाज नहीं है। परन्कु, इसकी चर्चा दूसरी महामारियों से अलग अवश्य है। आज हमारे पान संचार के तकनीकी संसाधन हैं, जागरूकता के माध्यम हैं, शिक्षिह समाज है और स्वास्थ्य सेवाओं के विकल्प हैं। पहले ऐसा नहीं था। इसके अतिरिक्त आदमी का अदम्य साहस है, जो उसके अन्य जिजीविषा को बनाये रखता है। आज भी कोराना जैसी महामारी मैं जीने की निरन्तर हमें जीने की इच्छा निरन्तर बनाए हुए है जो हमें आगे बढ़ने साहस देती है। दुनिया में समय-समय पर अनेक महामारी आती रही हैं, परन्तु कुछ महामरी ऐसी हैं जो समाज के अन्तर्मन को क्रेद कर रह देती हैं और समाज पर प्रश्न भी खड़ा करती हैं। आखिर समाज इनके प्रति इतना सजग और गम्भीर क्यों नहीं बन पाया। महामारी बन भौतिकता से भी कोई सम्बन्ध नहीं है, परन्तु साहित्यकार और दार्शनिक इसकी अभिव्यक्ति अलग तरीके से करता है जो समाज प्रभावित करती है।

वैश्विक साहित्य के आलोक में यदि देखा जाये तो महामारी कौ अभिव्यक्ति के कई रूप दिखाई देते हैं। इसके अलावा ये अन्य विधाओं- संगीत, ललित कला और चित्रकला के माध्यम से भी सामके आये हैं। भारतीय साहित्य में महामारी की प्रस्तुति उस स्तर पर नहीं हैं पायी है, जिस स्तर पर अन्य भाषाओं के साहित्य में । यहाँ पर अभाव; विषमता और गरीबी को कथा साहित्य में महामारी की तरह ही प्रस्तुष किया गया है। इसी के माध्यम से हो आदमी के अन्दर जिजीविषा व निर्माण किया गया है। महामारी का चिन्तन व्यापक स्तर पर होता | तेजी से बढ़ता उपभोक्ता वर्ग और उसकी जरूरतें भी चिंतन का आधा इससे डरकर शहर छोड़कर गाँवों कौ और भाग रहे हैं, जबकि शहरों में स्थास्थ्य सेवाएँ बेहतर और आधुनिक हैं। बंगाल का अकाल और उस समय की हैजा तथा चैचक की धीभारी भारतीय साहित्य का हिस्सा उस तरह से नहीं बन सकी जिस तरह से अर्थशास्त्र का हिस्सा बन पाने में कामयाब हुई। शायद भारतीय साहित्यकार अधिकतर चिन्तन और वाद की परिकल्पना में रहने के कारण समाज के हिस्सों को ही कथाओं का रूप देता कई है।इस तरह की प्रस्तुतियाँ- जिसमें मानव जाति का अस्तित्व संकट में है, कैसे साहित्य के माध्यम से लोगों को प्रभावित करती है, यह हमें पश्चिम के साहित्य से सीखने की जरूरत है। यहाँ छोटी से छोटी आपदाओं की प्रस्तुति साहित्य में देखने को मिलती है।

ओ. हेनरी की कहानी 'द लास्ट लीफ ' में जीवन को आशान्वित करते हुए बेल के पत्ते जांसी नाम की पात्र के मन में जीवन जीने का कारण बनते हैं। उसका मानना है कि जिस दिन इसका आखिरी पत्ता गिर जायेगा, उस दिन वह भी मर जायेगी | ऐसी कहानी की परिकल्पना करना बेहद कठिन होता है और वह भी इस उत्तर-आधुनिक युग में, परन्तु कहानी पढ़ने के बाद पाठक को बोध होता है कि निमोनिया जैसी बीमारी को नजरांदाज करके जीवन को समझने का प्रयास शायद पात्र के लिए इससे अच्छा नहीं हो सकता था। पात्र की इस जीवन दृष्टि को देखकर डॉक्टर कहता है हेनरी की यह कहानी सब्र और हॉसले की नयी व्याख्या है। इससे हमें सीख मिलती है कि जिस मर्ज की दवा नहीं मिलती तोनिश्चित रूप से हमें उम्मीद की किरण को खोजने की आवश्यकता है। जीवन का यह दर्शन कोरोना जैसी महामारी में हमारा पथ प्रदर्शन करता है। भारतीय साहित्य में ऐसी कथाओं की कमी नहीं है जो आदर्शवाद की द्योतक हैं, वो सभी हमें प्रेरित करती हैं जिनकी विषय - वस्तु सामाजिक यथार्थ पर आधारित है।' जिंदगी ! और जोंक ' ऐसी ही कहानी है जिसे प्रसिद्ध साहित्यकार अमरकान्त ने लोकधारणाओं और विश्वासों को आधार मानकर गढ़ा है। इस कहानी का पात्र रजुआ भिखारी होने के बावजुद जीवन से हार नहीं मानता है। वह तिरस्कार को सहन करता है, अनेक लानते सहन करता है, फिर भी वह लोक -विश्वासों के आधार पर. आगे बढ़ता रहता है। जब उसकी मौत की खबर को उसके गाँव पहुँचाने के लिए चिट्ठी को कथावाचक लिख देता है तो अचानक रजुआ प्रकट होकर कहता है

यहाँ कहानीकार जिस - जीवन के उपक्रम को बताना चाहता है वह यह है कि हैजा और खुजली जैसे भंयकर रोग हो जाने के बावजूद भी कहानी का पात्र रजुआ जिन्दगी को किसी भी तरीके से पकड़कर रखना चाहता है। ये हमारी देसी कथाओं के नायक हैं जिनके बारे में अमरकान्त ने कहानी के अन्त में कहा ये कथाएँ किसी महामारी या जीवन के संकट का महज चित्रण नहीं करती हैं, अपितु आदमी के हौसले. का जयघोष करती हैं। आज भी कोरोना महामारी के समय इसी हौंसले और आत्मविश्वास को आवश्यकता है।तभी इस संकट से बाहर निकला जा सकता है।

दुनिया में जब-जब महामारी का जिक्र होगा तो 'द प्लेग" नामक उपन्यास का उद्धरण दिया जायेगा।

फ्रांसिसी उपन्यामकार अस्यपैर काम मै इस उपन्यास में फ्रांस के शहर ओरान में फैली प्लेग की बीमारी को चित्रित किया है। आज की व्याख्या में यह महज उपन्यास नहीं हैं. बल्कि महामारी के संघर्ष की अनोखी दास्तान है। उपन्यास की कथा में रियो ताम का पात्र महामारी से मरने वालों के साथ जीवन्त सामना करता है।

उपन्यास की कथा में वर्णात्मकता के अलावा दार्शनिक पुट भी है जब एक पात्र कहता है कि यह उपन्यास जीवन की नैतिकता और विज्ञान तथा आशावाद की धारणा पर आधारित है। अल्बयेर कामू रियो नाम के पात्र के माध्यम से जीवन की सार्थकता और निरर्थकता को परिभाषित करते हैं। उस समय प्लेग की महामारी इतनी भंयकर थी कि उसे किसी की हालत में सुधार होने में भो शंका पैदा होती थी। मौत के आंकड़ों का इन्तजार करने लगा. जो हर सोमवार को घोषित किए जाते थे, उनमें कमी हो गयी थी।'

निश्चित रूप से आज के हालात में ऐसे उपन्यास का पढ़ना मानव मन में जीवन जीने की प्रेरणा देता है। उर्दू के प्रसिद्ध कथाकार राजिंदर सिंह बेदी ने ' क्वारंटीन' नाम की कहानी लिखी । क्वारंटीन नाम उस समय उतना साधारण नहीं था, जितना आज के समय है। कोरोना की बीमारी ने इस शब्द को जागरूकता के तौर पर जन-जन तक परिचित कराया है। आज हर कोई जानता है कि यदि कोरोना संक्रमण के लक्षण दिखाई देते हैं और यदि उससे बचना है तो उसे कुछ दिन क्वारंटीन रहना होगा। परन्तु, राजिंदर सिंह बेदी की कहानी में यह शब्द मौत का पर्याय है। अपने रचना काल के समय इसको पढ़ना निश्चित रूप से डर पैदा करता होगा, जब इसका बोध आज भी ऐसा होता है। आज क्ारंटीन सेंटर में सेवा करने वाले को ' कोरोना वॉरियर ' कहा जाता है, जो डॉक्टर से लेकर सफाई कर्मी तक होते हैं। जनता उनके इस सेवा-भाव से गदगद् होकर उन्हें फूलों की माला पहनाती है। परन्तु, 'क्वारंटीन ' कहानी में ऐसा नहीं हो पाता | वहाँ यह सम्मान डॉक्टर को मिलता है, परन्तु जब उसका सामना कहानी के पात्र सफाई कर्मो ' भागव' से होता है तो 'क्वारंटीन' कहानी में कथा का वृतांत अपनी जगह है, परन्तु यह क्वारंटीन सेंटर के वास्तविक हालात को ब्यान करती है । कहानी की शुरूआत ही इस यथार्थ से होती है

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि महामारी का मानव जीवन में आना निश्चित नहीं, बल्कि अनायास है। आज के समय इसके स्रोतों को ढूंढा जा सकता है और इसके लिए उत्तरदायी भी ठहराया जा सकता है। जैसे कि पूरे विश्व को पता है कि कोरोना महामारी की शुरूआत चीन से हुई और आदमी के आवागमन ने उसे पूरे विश्व को जकड़ लिया। कई महामारियों के पैदा होते और उसके कारणों का जानना आज भी संभव नहीं है। इसलिए ऐसी स्थिति में मनुष्य का हौसला और साहस ही काम आता है जब वह अपने जीवन के प्रति आसक्त होता है।यह आसक्ति ही उसे ऐसी महामारियों से उभरने में बल देती है।